भाषा के प्रति सोच में बदलाव करना होगा: डॉ प्रियदर्शी

रांची | संवाददाता

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र ने सेंट्रल लाइब्रेरी में गुरुवार को क्षेत्रीय व जनजातीय भाषाओं के विकास में हिन्दी के योगदान विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया। वक्ता साहित्यकार डॉ अशोक प्रियदर्शी ने कहा कि हिन्दी भाषा के प्रति लोगो में कम रुचि दिख रही है। आज के इस दौर में जब देश प्रगति की ओर बढ़ रहा है लोगों में हिन्दी के प्रति मानसिकता अच्छी नहीं है। लोग इसको ग्लैमर नहीं मानते और अंग्रेजी को बढ़ावा देते नजर आते हैं।

उन्होंने आगे बताया कि बहुत सारे ऐसे शब्द हैं जो हिन्दी भाषा से ही निकले हैं। ये भाषा जैसे-जैसे फैलती गई इसका उच्चारण भिन्न होता गया। आज बच्चे का जन्म होते ही लोग सोचते हैं कि बच्चा हिन्दी के अलावा अंग्रेजी बोलना सीखे, इस तरह की सोच को खत्म करना होगा। हिन्दी से ही पूर्ण विकास संभव है। हमें हिन्दी को आगे बढ़ाना है तो बच्चों को जन्म से हिन्दी का महत्व समझाना होगा।

रांची विवि के प्रति कुलपति डॉ कामिनी कुमार ने हिन्दी को आगे बढ़ाने लिए हर संभव प्रयास करने की बात कही। उन्होंने कहा कि कार्यालय में भी जहां भी संभव हो हिन्दी से ही पत्राचार करना चाहिए। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ गिरधारी राम गौंझू ने की।

हिंदी के प्रति लोगों की मानसिकता अच्छी नहीं : अशोक प्रियदर्शी

» हिंदी दिवस पर शहीद स्मृति भवन में व्याख्यान का हुआ आयोजन

संवाददाता॥

रांची। इंदिरा गाँधी राष्ट्रिय कला केंद्र, रांची शाखा ने हिंदी दिवस के मौके पर क्षेत्रीय एवं जनजातीय भाषाओं के विकास में हिंदी का योगदान विषय पर व्याख्यान का आयोजन शहीद स्मृति सभागार में किया। समारोह में रांची विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति डॉ कामिनी कुमार मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुई। हिंदी जगत के नामों में से एक डॉ अशोक प्रियदर्शी वक्ता के रूप में मौजूद हुए। इन्हें बहुत सारे क्षेत्रीय एवं राष्ट्रीय पदक भी प्राप्त हुए है। उन्होंने कहा कि लोगों के अंदर हिंदी भाषा के प्रति लोगों में कम रुचि होती है। आज के इस दौर में जब देश प्रगति के ओर बढ़ रहा है, वहीं लोगों के अंदर हिंदी के प्रति मानसिकता अच्छी नहीं है। लोग इसको ग्लैमर नहीं मानते ,लोग अंग्रेजी को ज्यादा बढ़ावा देते आये हैं और बढ़ावा दे भी रहे हैं। जिससे आज के समय में हिंदी को लोग लिखने एवं बोलने में कम प्रयोग करते हैं। उन्होंने कहा कि हिंदी भाषा का क्षेत्रीय एवं जनजातीय भाषाओं के विकास में सबसे ज्यादा योगदान रहा है। बहुत सारे शब्द है जो हिंदी की भाषा से ही निकले हैं। अलग-अलग राज्यों में थोड़ा अलग प्रतीत होता है, लेकिन जो भी शब्द कार्य में इस्तेमाल किये जाते हैं, उसमें हिंदी का काफी योगदान है। आजकल बच्चे का जन्म होते ही लोग सोचते है कि बच्चा हिंदी के अलावा अंग्रेजी बोलना सीखे। आज के समय में लोगों की ऐसी मानसिकता हो गयी है की अगर आप हिंदी जानते है और बोलते है तो उन्हें आगे ना बढ़ा कर लोग उनके स्तर को गिरा देते है। अगर आज हमें हिंदी को आगे बढ़ाना है तो हमें अपने बच्चों को जन्म से उसकी शिक्षा में हिंदी को ज्यादा महत्व देना होगा। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ गिरधारी राम गंजू ने की। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक डॉ बच्चन कुमार ने लोगों का स्वागत किया। उन्होंने रांची शाखा के उद्देश्यों के बारे में लोगो को रूबरू करवाया। कार्यक्रम के आखिर में विदित नाथ झा ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम में लगभग 150 छात्र छात्राए एवं अन्य लोग उपस्थित थे।

हिंदी में काम करने की आदत डालें : अशोक

रांची. इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र रांची शाखा एवं रांची विवि के संयुक्त तत्वावधान में गुरुवार को परिचर्चा का आयोजन किया गया. इसका विषय क्षेत्रीय एवं जनजातीय भाषाओं के विकास में हिंदी का योगदान था. कार्यक्रम शहीद स्मृति सभागार में हुआ. मौके पर मुख्य वक्ता के तौर पर मौजूद साहित्यकार डॉ अशोक प्रियदर्शी ने कहा कि भाषा का काम तोड़ना नहीं जोड़ना होता है. भारत बहुभाषी देश है और हर भाषा की अपनी पहचान है. जहां तक हिंदी में काम करने की बात है, तो हमें इसकी आदत डालनी चाहिए. क्षेत्रीय भाषाओं के विकास में हिंदी का योगदान है. क्षेत्रीय भाषाओं की विसंगतियों को हिंदी ने दूर किया.

प्रभात खबर
Fri, 15 Sep
epaper.prabl